भगवान बुद्ध के प्रथम महाश्रावक

अञ्ञासिकोण्डञ्ञ

(रात्रज्ञों में अग्र)

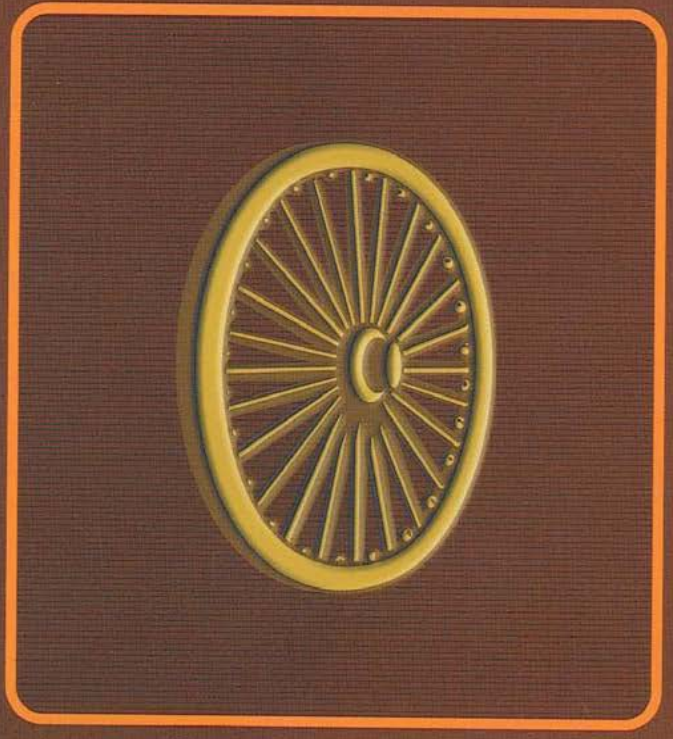

विपश्यना विशोधन विन्यास

भगवान बुद्ध के प्रथम महाश्रावक

अञ्ञासिकोण्डञ्ञ

(रात्रज्ञों में अग्र)

विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी

भगवान बुद्ध के प्रथम महाश्रावक

अञ्ञासिकोण्डञ्ञ

भगवान बुद्ध के प्रथम महाश्रावक

अञ्ञासिकोण्डञ्ञ

विषयानुक्रमणिका

प्रकाशकीय ७

बुद्ध-शासन के सर्वप्रथम शैक्ष्य ९

अचूक भविष्यदर्शी ९

तीव्र धर्म-संवेग जागा १०

आस्था डगमगायी.....१०

अञ्ञासि वत, भो कोण्डञ्ञो! ११

पंचवर्गीय भिक्षु अरहंत हुये.....१४

धर्म के प्रति निष्ठा १५

कोण्डञ्ञ का अधिष्ठान १५

एकांतवास का संकल्प.....१५

छद्दन्त भवन में एकांतवास १६

मिथ्या संकल्पों से मुक्ति १७

कोण्डञ्ञ के गुण..... १९

देवेन्द्र शक्र को देशना १९

भांजा को उसके योग्य स्थान दिया.....१९

वंगीश द्वारा कोण्डञ्ञ की प्रशंसा २०

धम्म पटिवेधन में अग्ग (धर्म प्रतिवेधन में अग्र) २०

पूर्व जन्मों के प्रसंग २२
भगवान पदुमुत्तर की भविष्यवाणी.....२२
अनवरत पुण्यकर्म.....२३
परिनिर्वाण.....२४
परिशिष्ट २५
धर्मचक्र के दो प्रकार २५
श्रावक तथा महाश्रावक.....२५
विपश्यना साहित्य.....२९
विपश्यना साधना केंद्र ३२

प्रकाशकीय

सम्यक सम्बुद्ध के बाद कोण्डञ्ञ ही वह पहले व्यक्ति थे जिन्होंने धर्म का प्रतिवेधन किया, इसलिये भगवान के मुख से उदान के ये शब्द निकले **'अञ्ञासि वत, भो, कोण्डञ्ञ अञ्ञासि वत, भो कोण्डञ्ञ!** (अरे! कोण्डञ्ञ ने जान लिया, कोण्डञ्ञ ने जान लिया!) तभी से उनका नाम पड़ गया अञ्ञासिकोण्डञ्ञ। कोण्डञ्ञ कपिलवस्तु के पास बसे द्रोणवस्तु के निवासी थे। वह तीनों वेद और महापुरुष लक्षण शास्त्र के प्रकांड विद्वान थे।

शाक्यराज शुद्धोदन के पुत्र के नामकरण संस्कार के समय शिशु सिद्धार्थ के सम्यक सम्बुद्ध होने की भविष्यवाणी केवल उन्होंने ही की थी। इसीलिये उनतीस वर्ष तक राजकुमार सिद्धार्थ के संन्यास लेने की प्रतीक्षा करते रहे। जब कुमार के संन्यास की बात का पता चला तो अपने चार साथियों के साथ वह भी घर छोड़ कर निकल पड़े। छः वर्षों तक वह अपने साथियों के साथ संन्यासी सिद्धार्थ के साथ रहे, पर जब सिद्धार्थ ने भोजन ग्रहण करना प्रारंभ किया तब उसे तप-भ्रष्ट हुआ मान कर उन्होंने साथ छोड़ दिया।

भगवान के धर्मचक्र प्रवर्तन करने पर ये पाँचो ब्राह्मण अरहंत हुए। इसके बाद धर्म के प्रति कोण्डञ्ञ की निष्ठा ऐसी दृढ़ हुई की साधना में लीन उन्हें दिखाते हुए भगवान ने कहा– जिसका मन-चित्त निर्विकार हो गया है उसकी प्रशंसा देव और ब्रह्मा भी करेंगे। आगे भगवान बोले- भिक्षुओं! मेरे श्रावकों में जो सर्वप्रथम प्रव्रजित, सर्वप्रथम धर्म का प्रतिवेधन किया, जो लम्बे समय तक रात्रि में साधना कर रात्रज्ञ (रत्तंञ्ञु) और क्षीणास्रव हुए वह हैं अञ्ञासिकोण्डञ्ञ।

आयुष्मान कोण्डञ्ञ को एकांत प्रिय था। भिक्षु में वरिष्ठतम श्रावक होने के कारण जेतवन में भगवान को छोड़ कर सभी- दोनों अग्रश्रावक, सभी महाश्रावक तथा अन्य श्रावक उनका स्वागत सत्कार करते, जिससे उन्हें बड़ा संकोच लगता। इसलिये वे भगवान से अनुमति प्राप्त कर एकांतवास के लिए हिमालय क्षेत्र में चले गये।

एक बार उन्होंने देवेन्द्र शक्र को देशना दी। अपने भांजे कुमार पुण्ण को प्रेरित कर प्रव्रजित कराया। एक बार v½Is थेर ने उनकी प्रशंसा में कहा- आप

महान प्रतापी, त्रयविध और परचित्त ज्ञाता हैं। भगवान से अनुमति प्राप्त कर उन्होंने हिमालय क्षेत्र में ही परिनिर्वाण प्राप्त किया। वहाँ उनके सेवक हस्तिनागों ने उनका अंतिम संस्कार किया।

विपश्यना विशोधन विन्यास